Adda247 GET IT ON Google Play

Top 30 CDP Expected Question & Ans. in UP TET Paper I 2026

Q.1 निपुणता उन्मुख शिक्षार्थी आमतौर पर सफलता का श्रेय _____ को देते हैं और असफलता का श्रेय _____ को देते हैं।

A. योग्यता और अच्छा भाग्य; कार्य कठिनाई
B. क्षमता और प्रयास; दुर्भाग्य
C. क्षमता और अच्छी भाग्य; कम क्षमता
D. क्षमता और प्रयास; अपर्याप्त प्रयास

Answer: D

Sol: सही उत्तर (D) योग्यता और प्रयास; अपर्याप्त प्रयास है।
निपुणता-उन्मुख शिक्षार्थी, जिन्हें आंतरिक रूप से प्रेरित शिक्षार्थी भी कहा जाता है, मानते हैं कि सफलता उनकी अपनी योग्यताओं और प्रयासों से आती है। वे अधिगम को व्यक्तिगत विकास के मार्ग के रूप में देखते हैं, और वे चुनौतियों का आनंद लेते हैं क्योंकि ये सुधार करने और क्षमता प्रदर्शित करने के अवसर प्रदान करते हैं।

Information Booster

1. वृद्धि मानसिकता: कैरोल ड्वेक द्वारा गढ़ा गया, यह निपुणता अभिविन्यास को रेखांकित करता है और खुद को साबित करने के बजाय अधिगम पर जोर देता है।
2. आंतरिक विशेषता: सफलता और विफलता को प्रयास जैसे आंतरिक कारकों के माध्यम से समझाया जाता है, न कि भाग्य या कार्य कठिनाई के माध्यम से।
3. अधिगम में लचीलापन: निपुणता-उन्मुख शिक्षार्थी विफलता से अधिक प्रभावी ढंग से उबरते हैं।
4. दीर्घकालिक उपलब्धि: ऐसे शिक्षार्थी बेहतर दीर्घकालिक परिणाम प्राप्त करते हैं क्योंकि वे केवल प्रदर्शन पर नहीं, बल्कि समझ पर ध्यान केंद्रित करते हैं।
5. सकारात्मक आत्म-धारणा: वे आत्म-प्रभावकारिता की प्रबल भावना और अधिगम की उनकी क्षमता में आत्मविश्वास के साथ विकसित होते हैं।

Additional Knowledge

- (a) योग्यता और अच्छा भाग्य; कार्य कठिनाई: यह नियंत्रण के बाहरी नियंत्रण को दर्शाता है और प्रदर्शन-उन्मुख या असहाय शिक्षार्थियों के लिए अधिक विशिष्ट है।
- (b) योग्यता और प्रयास; दुर्भाग्य: यद्यपि आंशिक रूप से आंतरिक, दुर्भाग्य को दोष देना व्यक्तिगत जवाबदेही से बचने को दर्शाता है।
- (c) योग्यता और सौभाग्य; कम योग्यता: यह असंगतता को दर्शाता है और कम आत्म-प्रभावकारिता या असहाय आरोपण शैली का संकेत दे सकता है।

Q.2 निम्नलिखित में से कौन सा कथन विकास के 'समीपदूराभिमुख' सिद्धांत का प्रतिनिधित्व करता है?

A. विकास बहुदिशात्मक एवं बहुआयामी होता है।
B. विभिन्न संस्कृतियों में रहने वाले समान जुड़वाँ बच्चों का विकास अलग-अलग दर से हो सकता है।
C. बच्चों में धागे में मोती डालने से पहले गेंद को पकड़ने की क्षमता विकसित होती है।
D. बच्चे खड़े होने से पहले बैठने की क्षमता विकसित करते हैं।

Answer: C

Sol: सही उत्तर है: **(c) बच्चे धागे में मोती डालने से पहले गेंद को पकड़ने की क्षमता विकसित करते हैं**।
विकास का **समीपदूराभिमुख सिद्धांत** विकास के उस पैटर्न को संदर्भित करता है जो शरीर के केंद्र से शुरू होकर बाहर की ओर चरम सीमाओं की ओर बढ़ता है। सरल शब्दों में, इसका मतलब है कि बच्चे अपने शरीर के उन हिस्सों पर नियंत्रण प्राप्त करते हैं जो केंद्र के सबसे करीब होते हैं (जैसे कि हाथ) इससे पहले कि वे उन हिस्सों पर नियंत्रण प्राप्त करें जो दूर हैं (जैसे कि उंगलियां और हाथ)।

सूचना बूस्टर:

1. **समीपदूराभिमुख दिशा**: विकास केंद्रीय अक्ष (रीढ़, कंधे) से उंगलियों और पैर की उंगलियों तक आगे बढ़ता है।
2. **पेशीय विकास पैटर्न**: सकल मोटर कौशल (जैसे कि हाथ हिलाना) ठीक मोटर कौशल (जैसे उंगलियों का ठीक से उपयोग करना) से पहले दिखाई देते हैं
3. **न्यूरोलॉजिकल आधार**: माइलिनेशन और तंत्रिका विकास प्रॉक्सिमोडिस्टल प्रगति का समर्थन करते हैं।
4. **शैक्षणिक प्रासंगिकता**: विकासात्मक रूप से उपयुक्त सीखने और खेल गतिविधियों को डिजाइन करने में मदद करता है।
5. **शिशु अवस्था में अवलोकन**: शिशु अपने हाथों से वस्तुओं को चलाने से पहले अपनी भुजाओं को हिलाना सीखते हैं।

अतिरिक्त ज्ञान:

- **(a) विकास बहुइद्शात्मक और बहुआयामी होता है**: यह विकास की सामान्य विशेषताओं, जैसे इसकी जटिलता और गैर-रैखिक प्रकृति को संदर्भित करता है।
- **(b) अलग-अलग संस्कृतियों में रहने वाले समान जुड़वाँ बच्चे अलग-अलग दरों पर विकसित हो सकते हैं**: यह विकास में **पर्यावरण और संस्कृति** की भूमिका को उजागर करता है, जो प्रकृति बनाम पोषण से अधिक संबंधित है।
- **(d) बच्चे खड़े होने से पहले बैठने की क्षमता विकसित करते हैं**: यह **मस्तिष्कोधमुख सिद्धांत** को दर्शाता है, जहाँ विकास सिर से नीचे की ओर बढता है।

Q.3 वायगोत्स्की के अनुसार बच्चे स्वयं से बात करते हैं:

A. विचार को सहायता देने और आत्म-नियमन के लिए।
B. जब वयस्क उन्हें नजरअंदाज कर रहे हों तो आत्म-सुदृढ़ीकरण प्रदान करने के लिए।
C. क्योंकि वे अहंकारी होते हैं।
D. क्योंकि उनका विचार अतार्किक होता है।

Test Prime By Adda247

ALL EXAMS, ONE SUBSCRIPTION

Test. Analyze. Improve. Repeat.

Don't just prepare. Perform.

Test Prime — built only for mock tests.

1,50,000+ Mock Tests

25,000+ Previous Year Papers

800+ Exam Covered

500% Refund on Selection

5 lakh+ Free Quizzes | **Daily** Free PDFs | **Job Alerts** Stay Updated

- Multilingual
- Detailed Solution
- Strong and Weak Areas

All India Rankings

Compete with lakhs.
Rank. Improve. Repeat.

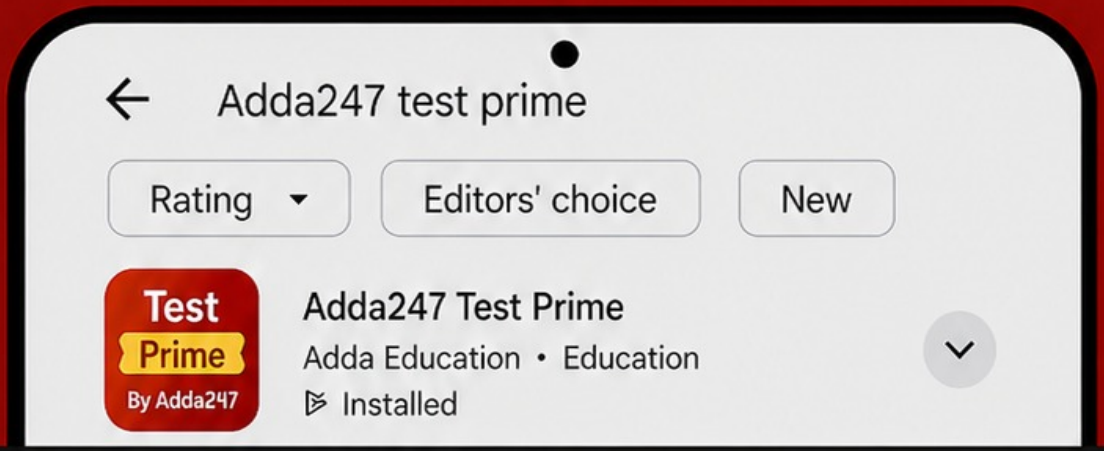

DOWNLOAD THE APP

Adda247 GET IT ON Google Play

Answer: A

Sol: सही उत्तर है: **(a) विचार में सहायता करने और आत्म-नियमन के लिए**।
लेव वायगोत्स्की के अनुसार, बच्चों का स्व-निर्देशित भाषण, जिसे **निजी भाषण** भी कहा जाता है, उनके संज्ञानात्मक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पियागेट के विपरीत, जिन्होंने इस तरह के भाषण को अहंकारवाद का संकेत माना, वायगोत्स्की ने इसे **सोच, समस्या-समाधान और आत्म-मार्गदर्शन** के लिए एक उपकरण के रूप में देखा। यह निजी भाषण बाल्यावस्था में सबसे अधिक स्पष्ट होता है और विकास के बाद के चरणों के दौरान धीरे-धीरे **आंतरिक भाषण** के रूप में आंतरिक हो जाता है।

Information Booster:

1. **निजी भाषण**: आत्म-मार्गदर्शन के लिए खुद से जोर से बोला गया भाषण; बचपन में ही देखा जा सकता है।
2. **स्व-विनियमन**: निजी भाषण बच्चों को भावनाओं और कार्यों को नियंत्रित करने में मदद करता है।
3. **आंतरिक भाषण में परिवर्तन**: किशोरावस्था में अंततः मौन और आंतरिक हो जाता है।
4. **सामाजिक-सांस्कृतिक सिद्धांत**: भाषा बौद्धिक अनुकूलन का एक प्राथमिक उपकरण है।
5. **शैक्षणिक निहितार्थ**: शिक्षकों को अधिगम के दौरान आत्म-चर्चा की अनुमति देनी चाहिए और प्रोत्साहित भी करना चाहिए।

Additional Knowledge:

- **(b) जब वयस्क उन्हें अनदेखा कर रहे हों तो आत्म-सुदृढ़ीकरण प्रदान करने के लिए**: वायगोत्स्की द्वारा समर्थित नहीं; यह एक व्यवहारवादी व्याख्या को दर्शाता है।
- **(c) क्योंकि वे अहंकारी हैं**: यह पियागेट का दृष्टिकोण है, वायगोत्स्की का नहीं। पियागेट ने आत्म-चर्चा को सामाजिक जागरूकता की कमी के रूप में देखा।
- **(d) क्योंकि उनका विचार अतार्किक है**: यह एक गलत व्याख्या है; वायगोत्स्की ने **निजी भाषण के कार्यात्मक मूल्य** को स्वीकार किया, भले ही यह वयस्कों को अपरिपक्व लगे।

Q.4 सामाजिक संचार में चुनौतियाँ किस्में स्पष्ट होती हैं:

A. ध्यानाभाव सक्रियता विकार
B. मस्तिष्क पक्षाघात
C. ऑटिज्म स्पेक्ट्रम विकार
D. अधिगम अक्षमताएं

Answer: C

Sol: सही उत्तर है: **(c) ऑटिज्म स्पेक्ट्रम विकार**।
ऑटिज्म स्पेक्ट्रम विकार (ASD) एक न्यूरोडेवलपमेंटल स्थिति है, जिसमें **सामाजिक संपर्क और संचार** में लगातार कठिनाइयाँ होती हैं, साथ ही **प्रतिबंधित और दोहराव वाला व्यवहार** भी होता है। एएसडी में **मुख्य कमियों** में से एक बिगड़ा हुआ **सामाजिक संचार** है, जो सामाजिक संकेतों की व्याख्या करने, आँख से संपर्क बनाए रखने, गैर-मौखिक इशारों को समझने या सामान्य बातचीत में शामिल होने में कठिनाई के रूप में प्रकट हो सकता है।

Information Booster:

1. **मुख्य विशेषता**: सामाजिक संचार की कमी एएसडी की एक नैदानिक पहचान है।
2. **व्यावहारिक भाषा की कमी**: सामाजिक संदर्भों में भाषा का उपयोग करने में कठिनाई।
3. **मन का सिद्धांत**: ASD वाले कई बच्चे दूसरों के दृष्टिकोण को समझने में संघर्ष करते हैं।
4. **अशाब्दिक संकेत**: हाव-भाव, चेहरे के भाव और शारीरिक भाषा की व्याख्या करने में समस्याएँ।
5. **हस्तक्षेप फोकस**: थेरेपी अक्सर संचार और सामाजिक कौशल में सुधार पर जोर देती है।

Additional Knowledge:

- **(a) ध्यानाभाव अतिसक्रियता विकार (ADHD)**: इसमें मुख्य रूप से ध्यान, अतिसक्रियता और आवेगशीलता से जुड़ी समस्याएँ शामिल हैं, न कि मुख्य सामाजिक संचार कमियों से, हालाँकि सामाजिक कठिनाइयाँ गौण रूप से हो सकती हैं।
- **(b) मस्तिष्क पक्षाघात**: एक पेशीय विकार; भाषण को प्रभावित करने वाली पेशीयदुर्बलताओं के कारण संचार चुनौतियाँ उत्पन्न हो सकती हैं।
- **(d) अधिगम अक्षमताएँ**: ये मुख्य रूप से पढ़ने, लिखने या गणित कौशल को प्रभावित करती हैं; सामाजिक संचार आम तौर पर बरकरार रहता है, हालांकि निराशा या सहवर्ती मुद्दे अप्रत्यक्ष रूप से इसे प्रभावित कर सकते हैं।

Q.5 वाइगोत्स्की के अधिगम और विकास के सिद्धांत के अनुसार, निम्नलिखित में से कौन सा स्कैफोल्डिंग का उदाहरण है?

A. किसी कार्य को छोटे-छोटे चरणों में विभाजित करना और आवश्यकतानुसार सहायता प्रदान करना
B. अभिप्रेरणा के रूप में छात्रों को उनके कार्य के लिए ग्रेड प्रदान करना।
C. किसी छात्र को पढ़ने का कार्य देना तथा उनसे स्वतंत्र रूप से प्रश्नों के उत्तर देने को कहना।
D. किसी छात्र को कोई कौशल दिखाना और फिर उसे स्वयं उसमें निपुण बनाना।

Answer: A

Sol: सही उत्तर है **(a) किसी कार्य को छोटे-छोटे चरणों में विभाजित करना और आवश्यकतानुसार सहायता प्रदान करना**।
स्कैफ़ोल्डिंग एक मुख्य अवधारणा है जो **लेव वायगोत्स्की के सामाजिक-सांस्कृतिक सिद्धांत** से ली गई है, विशेष रूप से **समीपस्थ विकास का क्षेत्र (ZPD)** के उनके विचार के संबंध में। ZPD उस सीमा को संदर्भित करता है जो एक शिक्षार्थी **बिना सहायता** के कर सकता है और **मार्गदर्शन और सहायता** के साथ वह क्या हासिल कर सकता है। स्कैफोल्डिंग एक शिक्षक, सहकर्मी या सलाहकार द्वारा प्रदान किया जाने वाला **अस्थायी समर्थन** है जो शिक्षार्थी को इस क्षेत्र में कोई कार्य पूरा करने में मदद करता है।

सूचना बूस्टर:

Adda247 GET IT ON Google Play

1. **स्कैफोल्डिंग की उत्पत्ति**: वायगोत्स्की के काम से प्रेरित होकर जेरोम ब्रूनर द्वारा गढ़ा गया।
2. **गतिशील समर्थन**: शिक्षार्थी के वर्तमान प्रदर्शन के आधार पर समायोजित किया गया।
3. **उदाहरण**: संकेत, चिह्न, प्रश्न पूछना, निर्देशित अभ्यास, जोर से सोचना।
4. **लक्ष्य**: सहायता से स्वतंत्र प्रदर्शन में परिवर्तन।
5. **ZPD का अभिन्न अंग**: स्कैफोल्डिंग **शिक्षार्थी के समीपस्थ विकास के क्षेत्र के भीतर** मौजूद होती है

अतिरिक्त ज्ञान:

- **(b) अभिप्रेरणा के रूप में ग्रेड प्रदान करना**: यह **बाह्य प्रेरणा** का उदाहरण है, न कि स्कैफोल्डिंग का। वायगोत्स्की ने पुरस्कारों पर नहीं, बल्कि सामाजिक संपर्क और निर्देशित अधिगम पर जोर दिया।
- **(c) स्वतंत्र रूप से पढ़ना**: इसमें **इंटरैक्टिव समर्थन** का अभाव है, अगर छात्र संघर्ष करता है तो कार्य को ZPD से बाहर रखा जाता है।
- **(d) किसी कौशल का प्रदर्शन करना और छात्र को उसमें महारत हासिल करने के लिए छोड़ देना**: केवल प्रदर्शन ही स्कैफोल्डिंग नहीं बनता जब तक कि अधिगम की पूरी प्रक्रिया में **इंटरैक्टिव समर्थन** प्रदान न किया जाए।

Q.6 डिस्ग्राफिया की विशेषता है:

A. विलंबित पेशीय कौशल
B. पढ़ने में प्रवाह की कमी
C. लेखन में कठिनाइयाँ
D. पुनरावृत्ति व्यवहार पैटर्न

Answer: C

Sol: सही उत्तर है: **(c) लिखने में कठिनाई**।
डिसग्राफिया एक विशिष्ट अधिगम अक्षमता है जो पढ़ने की क्षमता की परवाह किए बिना, एक शिक्षार्थी की सुसंगत रूप से लिखने की क्षमता को प्रभावित करती है। यह वर्तनी, खराब लिखावट और विचारों को कागज पर उतारने में परेशानी के माध्यम से प्रकट होता है। डिस्ग्राफिया वाले बच्चों को लिखने का काम थकाऊ और निराशाजनक लग सकता है, जिससे बचने का व्यवहार होता है। मोटर विकास में देरी (जो सामान्य हो सकती है) के विपरीत, डिस्ग्राफिया विशेष रूप से लिखने की क्रिया में शामिल तंत्रिका प्रसंस्करण को बाधित करता है, जिसमें ठीक मोटर नियंत्रण, वर्तनी और लिखित पाठ की रचना शामिल है। महत्वपूर्ण बात यह है कि डिस्ग्राफिया से पीड़ित बच्चों में अक्सर विचार और समझ होती है, लेकिन उन्हें लिखित रूप में व्यक्त करने में कठिनाई होती है।

Information Booster:

1. **न्यूरोलॉजिकल आधार**: डिस्ग्राफिया एक मस्तिष्क-आधारित विकार है जो लेखन क्षमताओं को प्रभावित करता है।
2. **ठीक मोटर मुद्दे**: बच्चों को पेंसिल की पकड़, स्पेसिंग और लगातार अक्षर बनाने में परेशानी हो सकती है।
3. **संज्ञानात्मक भार**: लिखना संज्ञानात्मक रूप से थका देने वाला हो जाता है, जो अक्सर रचनात्मकता को प्रभावित करता है।
4. **निदान**: आमतौर पर शुरुआती प्राथमिक वर्षों में पहचाना जाता है जब लेखन कार्य तीव्र हो जाते हैं।
5. **हस्तक्षेप**: बहु-संवेदी विधियों, भाषण-से-पाठ उपकरणों और व्यक्तिगत निर्देश का उपयोग मदद करें।

Additional Knowledge: गलत विकल्पों की व्याख्या

- **(a) विलंबित पेशीय कौशल**: जबकि डिस्ग्राफिया में खराब पेशीय समन्वय देखा जा सकता है, यह मुख्य विशेषता नहीं है। मोटर कौशल में देरी डिस्प्रैक्सिया जैसे अन्य विकासात्मक विकारों के परिणामस्वरूप हो सकती है।
- **(b) पढ़ने में प्रवाह की कमी**: यह आमतौर पर **डिस्लेक्सिया** से जुड़ा होता है। डिस्ग्राफिया वाले बच्चे अच्छी तरह से पढ़ सकते हैं लेकिन लिखने में संघर्ष करते हैं।
- **(d) दोहरावपूर्ण व्यवहार पैटर्न**: यह **ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर (ASD)** की एक खास विशेषता है।

Q.7 विद्यार्थियों को अच्छे समस्या समाधानकर्ता बनने में मदद करने के लिए, एक शिक्षक को निम्नलिखित अभ्यास पर जोर देना चाहिए:

A. ऐसी जानकारी पर ध्यान केंद्रित करना जो मौजूदा विश्वासों और पूर्वधारणाओं की पुष्टि करती है।
B. समस्याओं का एक विशेष निश्चित तरीके से समाधान करना।
C. बड़ी जटिल समस्याओं को छोटी प्रबंधनीय समस्याओं में तोड़ना।
D. समस्या से संबंधित केवल एक विशेष जानकारी पर ध्यान केंद्रित करना।

Answer: C

Sol: सही उत्तर है: **(c) बड़ी जटिल समस्याओं को छोटी प्रबंधनीय समस्याओं में तोड़ना**।
समस्या-समाधान एक संज्ञानात्मक प्रक्रिया है जिसके लिए शिक्षार्थियों को जानकारी का विश्लेषण, संश्लेषण और मूल्यांकन करने की आवश्यकता होती है। मजबूत समस्या-समाधान कौशल विकसित करने की एक प्रमुख रणनीति छात्रों को जटिल समस्याओं को छोटे, अधिक प्रबंधनीय भागों में विघटित करना सिखाना है। यह दृष्टिकोण **मेटाकॉग्निशन** और **रचनात्मक शिक्षण सिद्धांत** में निहित है, जो कार्यों के साथ सक्रिय जुड़ाव और समस्याओं को समझने और हल करने के लिए अपने स्वयं के तरीकों को विकसित करने पर जोर देता है।

जब शिक्षार्थी किसी जटिल समस्या को सरल उप-समस्याओं में तोड़ते हैं, तो वे एक समय में एक भाग पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं, जो संज्ञानात्मक अधिभार को कम करता है और स्पष्टता को बढ़ाता है। यह विश्लेषणात्मक सोच, व्यवस्थित तर्क और बेहतर निर्णय लेने को भी प्रोत्साहित करता है। शिक्षकों को इस तकनीक को सोच-समझकर काम करने की रणनीतियों और मचान का उपयोग करके मॉडल बनाना चाहिए, छात्रों को समस्याओं के उप-घटकों की पहचान करने और चरण-दर-चरण समाधानों का मूल्यांकन करने के लिए मार्गदर्शन करना चाहिए।

सूचना बूस्टर:

1. इस रणनीति को अक्सर **समस्या अपघटन** या **कार्य विश्लेषण** कहा जाता है।
2. यह सूचना भार को सरल बनाकर कार्यशील स्मृति दक्षता में सुधार करता है।
3. समस्या-समाधान कार्यों में व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है।
4. यह **सहयोगी सीखने** को प्रोत्साहित करता है, क्योंकि विभिन्न भागों को समूहों में हल किया जा सकता है।

Adda247 GET IT ON Google Play

5. विश्लेषण और अनुप्रयोग में **ब्लूम के वर्गीकरण** के साथ संरेखित करता है।

अतिरिक्त ज्ञान:

- **(a) मौजूदा मान्यताओं और पूर्वधारणाओं की पुष्टि करने वाली जानकारी पर ध्यान केंद्रित करना**:
  इसे **पुष्टि पूर्वाग्रह** के रूप में जाना जाता है, जो आलोचनात्मक सोच में बाधा डालता है और खराब निर्णय की ओर ले जाता है। छात्र वैकल्पिक दृष्टिकोणों के प्रति कम खुले होते हैं, जिससे उनकी समस्या-समाधान प्रभावशीलता कम हो जाती है।
- **(b) समस्याओं को एक विशेष निश्चित तरीके से देखना**:
  यह **कार्यात्मक निश्चितता** या **मानसिक सेट** से संबंधित है, जहां व्यक्ति अप्रभावी होने पर भी परिचित रणनीतियों पर भरोसा करते हैं। यह नवाचार और अनुकूलनशीलता को रोकता है, जो गतिशील शिक्षण संदर्भों में आवश्यक है।
- **(d) समस्या से संबंधित केवल एक विशेष जानकारी पर ध्यान केंद्रित करना**:
  इसे **एंकरिंग पूर्वाग्रह** के रूप में जाना जाता है, यह समग्र विश्लेषण को प्रतिबंधित करता है। छात्र अन्य महत्वपूर्ण डेटा को अनदेखा कर सकते हैं, जिससे अधूरे या गलत निष्कर्ष निकल सकते हैं।

Q.8 अभिकथन (A): शिक्षकों को समावेशी कक्षा में छात्रों की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए बहु-संवेदी सामग्रियों का उपयोग करना चाहिए।

कारण (R): समावेशी कक्षाओं को पाठ्यचर्या सामग्री के मानकीकरण के साथ-साथ मूल्यांकन रणनीतियों को भी अपनाना चाहिए।

सही विकल्प चुनिए:

A. (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
B. (A) और (R) दोनों असत्य हैं।
C. (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
D. (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है

Answer: A

Sol: सही उत्तर है: **(a) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है**।
अभिकथन (A) सत्य है क्योंकि **बहुसंवेदी शिक्षण** में एक समय में एक से अधिक इंद्रियों (दृश्य, श्रवण, गतिज, स्पर्श) को शामिल करना शामिल है, जो समावेशी कक्षाओं में विशेष रूप से लाभकारी है। ये रणनीतियाँ कई चैनलों के माध्यम से सीखने को सुदृढ़ करके **विविध शिक्षार्थियों** की मदद करती हैं, जिनमें सीखने की अक्षमता, ADHD, ऑटिज्म स्पेक्ट्रम विकार और अन्य विशेष आवश्यकताएँ शामिल हैं।

कारण (R) असत्य है क्योंकि पाठ्यचर्या सामग्री और मूल्यांकन का **मानकीकरण** समावेशिता के सिद्धांत का खंडन करता है। समावेशी शिक्षा व्यक्तिगत आवश्यकताओं, सीखने की शैलियों और क्षमताओं के आधार पर **विभेदीकरण** और **अनुकूलन** पर जोर देती है। मानकीकरण के बजाय, शिक्षकों को सभी छात्रों के लिए सीखने तक समान पहुँच सुनिश्चित करने के लिए **लचीले तरीके**, **व्यक्तिगत निर्देश**, **यूनिवर्सल डिज़ाइन फ़ॉर लर्निंग (UDL)**, और मूल्यांकन में **समायोजन** या **संशोधन** का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

Information Booster:

1. **बहुसंवेदी निर्देश** स्मृति प्रतिधारण और वैचारिक समझ को बढ़ाता है।
2. **स्पर्श अक्षर, दृश्य सहायता, गीत, आंदोलन-आधारित गतिविधियाँ** जैसे उपकरण प्रभावी हैं।
3. **समावेशी शिक्षा** सभी शिक्षार्थियों के लिए समान पहुँच और भागीदारी को बढ़ावा देती है।
4. **यूनिवर्सल डिज़ाइन फ़ॉर लर्निंग (UDL)** शिक्षण विधियों और आकलन में लचीलेपन का समर्थन करता है।
5. **व्यक्तिगत शिक्षा योजनाएँ (IEP)** अक्सर विशेष आवश्यकता वाले छात्रों के लिए बहु-संवेदी दृष्टिकोण की सलाह देती हैं।

Q.9 रचनावादी दृष्टिकोण में:

A. व्यक्ति पर्यावरणीय घटनाओं से निष्क्रिय रूप से प्रभावित होते हैं।
B. व्यक्तियों को नए व्यवहार सीखने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है।
C. अधिगम वर्तमान समझ को विस्तारित करना और रूपांतरित करना है।
D. अधिगम बस हमारे मस्तिष्क की खाली स्लेट पर संबंधों को लिखना है।

Answer: C

Sol: सही उत्तर है: **(c) अधिगम मौजूदा समझ को विस्तारित और रूपांतरित करना है।**
अधिगम के रचनात्मक दृष्टिकोण में, ज्ञान को पर्यावरण से निष्क्रिय रूप से प्राप्त करने के बजाय शिक्षार्थियों द्वारा सक्रिय रूप से निर्मित किया जाता है। शिक्षार्थी अपने पर्यावरण, अनुभवों और प्रतिबिंब के साथ बातचीत के माध्यम से अपने मौजूदा संज्ञानात्मक रुपरेखा पर नया ज्ञान बनाते हैं। यह सिद्धांत इस बात पर जोर देता है कि सीखना **अर्थ-निर्माण की एक प्रक्रिया** है, जहाँ व्यक्ति अपनी वर्तमान समझ को विस्तारित और रूपांतरित करते हैं, ताकि अधिक परिष्कृत, एकीकृत अवधारणाएँ बनाई जा सकें।

सूचना बूस्टर:

1. रचनात्मकता शिक्षार्थियों को उनके स्वयं के सीखने में **सक्रिय भागीदार** के रूप में देखती है।
2. **पूर्व ज्ञान** नई जानकारी की व्याख्या करने में एक केंद्रीय भूमिका निभाता है।
3. **सामाजिक संपर्क**, संवाद और सहयोग गहन सीखने का समर्थन करते हैं।
4. गलतियों और भ्रम को सीखने की प्रक्रिया के स्वाभाविक हिस्से के रूप में देखा जाता है।
5. अधिगम को **संदर्भगत** माना जाता है, और वास्तविक जीवन के अनुभव से अलग नहीं माना जाता है।

Adda247 GET IT ON Google Play

अतिरिक्त ज्ञान:

- **(a) व्यक्ति पर्यावरणीय घटनाओं से निष्क्रिय रूप से प्रभावित होते हैं**: यह **व्यवहारवादी** दृष्टिकोण से मेल खाता है, जहाँ पर्यावरण को सक्रिय संज्ञानात्मक भागीदारी के बिना प्रतिक्रियाओं को ट्रिगर करने वाले एक उत्तेजना के रूप में देखा जाता है।
- **(b) व्यक्ति नए व्यवहार सीखने के लिए अनुकूलित होते हैं**: फिर से, एक **व्यवहारवादी** दृष्टिकोण, विशेष रूप से **बी.एफ. स्किनर की ऑपरेटिव कंडीशनिंग**, जहां सुदृढीकरण और दंड व्यवहार को आकार देते हैं।
- **(d) सीखना बस हमारे मस्तिष्क की खाली स्लेट पर संबंधों को लिखना है**: यह **जॉन लॉक** द्वारा प्रस्तावित पुराने **टैबुला रासा** सिद्धांत को दर्शाता है, जो बिना किसी पूर्व प्रभाव के ज्ञान के निष्क्रिय स्वागत को दर्शाता है।

Q.10 अभिकथन (A): प्रभावी अध्यापक स्वयं को शिक्षार्थियों के दैनिक जीवन और सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से परिचित कराते हैं।
कारण (R): अधिगम सामाजिक संदर्भ में होता है।
सही विकल्प चुनिए:

A. (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
B. (A) और (R) दोनों असत्य हैं।
C. (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
D. (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है

Answer: C

Sol: सही उत्तर है: **(c) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R) (A) की सही व्याख्या है।**
प्रभावी शिक्षक पहचानते हैं कि छात्र विविध सामाजिक-सांस्कृतिक वातावरण से आते हैं, और इन संदर्भों को समझने से उन्हें ऐसे अधिगम के अनुभव डिज़ाइन करने की अनुमति मिलती है जो **प्रासंगिक, सार्थक और सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी** हों। जब शिक्षक छात्रों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, आर्थिक वास्तविकताओं और सामुदायिक जीवन से अवगत होते हैं, तो वे कक्षा की सामग्री को वास्तविक जीवन के अनुभवों से बेहतर ढंग से जोड़ सकते हैं।

यह अभिकथन **अधिगम के सामाजिक-सांस्कृतिक सिद्धांत** द्वारा समर्थित है, विशेष रूप से **लेव वायगोत्स्की** द्वारा जोर दिया गया है, जो कहता है कि **सीखना स्वाभाविक रूप से एक सामाजिक गतिविधि है**। इस सिद्धांत के अनुसार, संज्ञानात्मक विकास काफी हद तक बच्चे के सांस्कृतिक वातावरण में अधिक जानकार अन्य लोगों (शिक्षकों, साथियों, माता-पिता) के साथ बातचीत से प्रभावित होता है। भाषा, मानदंड और सांस्कृतिक उपकरण सीखने में मध्यस्थता करते हैं।

इसलिए, **कारण सीधे तौर पर इस कथन का समर्थन करता है**: यदि सीखना सामाजिक संदर्भ में होता है, तो शिक्षकों के लिए उस संदर्भ को समझना तर्कसंगत और आवश्यक है ताकि शिक्षण को प्रभावी बनाया जा सके। यह विश्वास, सम्मान और प्रासंगिकता को बढ़ावा देने में मदद करता है, जो सभी गहन सीखने के लिए आवश्यक हैं।

सूचना बूस्टर:

1. वायगोत्स्की का **समीपस्थ विकास का क्षेत्र (ZPD)** सीखने में सामाजिक संपर्क के महत्व पर प्रकाश डालता है।
2. सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षण **संलग्नता, अवधारण और प्रदर्शन** को बेहतर बनाता है।
3. **ज्ञान के कोष** दृष्टिकोण शिक्षार्थियों के घर के अनुभवों को शैक्षिक संपत्ति के रूप में उपयोग करें।
4. शिक्षक बच्चे की पृष्ठभूमि और औपचारिक ज्ञान के बीच मध्यस्थ के रूप में कार्य करते हैं।
5. छात्रों के जीवन को समझने से **समावेशी और न्यायसंगत कक्षाएँ** बनाने में मदद मिलती है।

Q.11 बच्चे -

A. जन्म से ही अनियंत्रित होते हैं और उन्हें सामाजिकता की आवश्यकता होती है।
B. इस दुनिया में आनुवंशिक कोड के साथ आते हैं जो उनके भाग्य का निर्धारण करते हैं।
C. वे जिस सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भ में बड़े होते हैं, उससे बहुत प्रभावित होते हैं।
D. इस विश्व में टेबुला रासा या खाली स्लेट के रूप में आओ।

Answer: C

Sol: सही उत्तर है: **(c) जिस सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भ में बड़े होते हैं, उससे बहुत प्रभावित होते हैं।**
यह दृष्टिकोण **विकास के सामाजिक-सांस्कृतिक सिद्धांत** के साथ सबसे अधिक निकटता से जुड़ा हुआ है, विशेष रूप से **लेव वायगोत्स्की** द्वारा उन्नत, जिन्होंने संज्ञानात्मक विकास में **सामाजिक संपर्क, भाषा और संस्कृति** के महत्व पर जोर दिया। इस सिद्धांत के अनुसार, बच्चे ज्ञान या व्यवहार के निष्क्रिय प्राप्तकर्ता नहीं होते, बल्कि अपने विकास में सक्रिय भागीदार होते हैं, जो उनके आस-पास मौजूद उपकरणों, प्रथाओं, मानदंडों और अंतःक्रियाओं द्वारा आकार लेते हैं।

Information Booster:

1. **लेव वायगोत्स्की का सिद्धांत**: अधिगम और विकास में **सामाजिक अंत:क्रिया** के महत्व पर जोर देता है।
2. **समीपस्थ विकास का क्षेत्र (ZPD)**: अधिगम सबसे अच्छा तब होता है जब बच्चों को अधिक जानकार अन्य लोगों द्वारा निर्देशित किया जाता है।
3. **सांस्कृतिक उपकरण**: भाषा, संकेत, प्रतीक और कलाकृतियाँ विचार प्रक्रियाओं को आकार देती हैं।
4. **रचनात्मक दृष्टिकोण**: सामाजिक संदर्भ के माध्यम से ज्ञान के निर्माण में शिक्षार्थी की भूमिका पर जोर देता है।
5. **गतिशील अंतःक्रिया**: विकास जीवविज्ञान और पर्यावरण की निरंतर अंतःक्रिया है - निश्चित या पूर्वनिर्धारित नहीं।

Additional Knowledge:

- **(a) जन्म से ही अनियंत्रित होते हैं और उन्हें सामाजिकता की आवश्यकता होती है**: यह एक पुराने सत्तावादी दृष्टिकोण को दर्शाता है। आधुनिक मनोविज्ञान नियंत्रण पर नहीं, बल्कि मार्गदर्शन और सुविधा पर जोर देता है।
- **(b) आनुवंशिक कोड भाग्य निर्धारित करते हैं**: जबकि आनुवंशिकी एक भूमिका निभाती है, वे **पूरी तरह से** एक बच्चे के परिणामों को निर्धारित नहीं करती हैं। **प्रकृति और पालन-पोषण** एक साथ काम करते हैं।

Adda247 GET IT ON Google Play

- **(d) टैबुला रासा (खाली स्लेट)**: **जॉन लॉक** का एक विचार, जो सुझाव देता है कि बच्चे पूरी तरह से अनुभव से आकार लेते हैं। हालाँकि, वर्तमान शोध जन्मजात क्षमताओं और पर्यावरणीय प्रभावों को मिलाकर एक अधिक **एकीकृत दृष्टिकोण** का समर्थन करता है।

Q.12 पियाजे के संज्ञानात्मक विकास सिद्धांत के संवेदी-गतिशील चरण की दो महत्वपूर्ण संज्ञानात्मक विकास उपलब्धि हैं:

A. जीववाद और परिवर्तन
B. वर्गीकरण और क्रमविन्यास
C. वस्तु स्थायित्व और विलंबित अनुकरण
D. विचार की प्रतिवर्तीता और काल्पनिक-निगमनात्मक तर्क

Answer: C

Sol: सही उत्तर है: **(c) वस्तु स्थायित्व और विलंबित अनुकरण**।
संवेदी-पेशीय चरण (जन्म से लेकर लगभग 2 वर्ष तक) जीन पियागेट के संज्ञानात्मक विकास के सिद्धांत में **पहला चरण** है। इस चरण में, शिशु मुख्य रूप से अपनी **इंद्रियों और पेशीय क्रियाओं** के माध्यम से दुनिया के बारे में सीखते हैं। वे स्पर्श, चूसने, पकड़ने और देखने के माध्यम से अपने पर्यावरण का पता लगाते हैं।
इस चरण में दो **मुख्य संज्ञानात्मक मील के पत्थर** हैं:

1. **वस्तु स्थायित्व**: यह समझ कि वस्तुएँ तब भी मौजूद रहती हैं जब वे दिखाई नहीं देती हैं। यह एक मौलिक संकेत है कि एक बच्चे ने मानसिक प्रतिनिधित्व विकसित करना शुरू कर दिया है। उदाहरण के लिए, यदि आप किसी खिलौने को कंबल के नीचे छिपाते हैं, तो एक बच्चा जिसने वस्तु स्थायित्व विकसित कर लिया है, वह उसे ढूँढ़ेगा।
2. **स्थगित अनुकरण**: किसी देखे गए व्यवहार को तुरंत नहीं, बल्कि **कुछ देरी के बाद** दोहराने की क्षमता। इससे पता चलता है कि बच्चा **सूचना को संग्रहीत और पुनः प्राप्त कर सकता है**, जो प्रतीकात्मक सोच और स्मृति विकास के लिए एक आवश्यक अग्रदूत है।

ये दो क्षमताएँ पर्यावरण के साथ विशुद्ध रूप से शारीरिक संपर्क से **प्रतिनिधित्वात्मक विचार के उद्भव** में परिवर्तन को दर्शाती हैं, जो विकास के अगले चरण के लिए मंच तैयार करती हैं।

सूचना बूस्टर:

1. **सेंसोरिमोटर इंटेलिजेंस**: सीखना संवेदी इनपुट और शारीरिक क्रिया पर आधारित है।
2. **प्रतीकात्मक विचार**: विलंबित अनुकरण **मानसिक प्रतिनिधित्व** की शुरुआत को इंगित करता है।
3. **वृत्ताकार प्रतिक्रियाएँ**: दोहराई जाने वाली क्रियाएँ जो शिशुओं को कारण और स्थान प्रभाव का पता लगाने में मदद करती हैं ।

अतिरिक्त ज्ञान:

- **(a) जीववाद और परिवर्तन**: **पूर्व-संक्रियात्मक चरण (2-7 वर्ष)** में देखी जाने वाली अवधारणाएँ, न कि संवेदी पेशीय चरण में। जीववाद में निर्जीव वस्तुओं को जीवन जैसे गुण प्रदान करना शामिल है।
- **(b) वर्गीकरण और क्रमीकरण**: **मूर्त संक्रियात्मक चरण (7-11 वर्ष)** में विकसित होते हैं। इनमें साझा विशेषताओं या तार्किक क्रम में वस्तुओं को व्यवस्थित करना शामिल है।
- **(d) विचार की प्रतिवर्तीता और काल्पनिक-निगमनात्मक तर्क**: क्रमशः **मूर्त** और **औपचारिक परिचालन चरणों** की विशेषताएँ। काल्पनिक-निगमनात्मक तर्क विशेष रूप से किशोरों (12+ वर्ष) में देखा जाता है।

Q.13 निम्नलिखित में से कौन सा बाह्य अभिप्रेरणा का सही वर्णन करता है?

A. पर्यावरणीय परिणामों से आने वाली अभिप्रेरणा।
B. अभिप्रेरणा जो व्यक्तिगत संतुष्टि की भावना से आती है।
C. अभिप्रेरणा जो कार्य के व्यक्तिगत आनंद से आती है।
D. अभिप्रेरणा जो आंतरिक कारकों से आती है।

Answer: A

Sol: सही उत्तर है: **(a) अभिप्रेरणा जो पर्यावरणीय परिणामों से आती है**।
बाह्य अभिप्रेरणा किसी व्यवहार को करने या किसी गतिविधि में शामिल होने की प्रेरणा को संदर्भित करती है, न कि गतिविधि के लिए बाहरी पुरस्कारों या परिणामों के कारण। इन **पर्यावरणीय परिणामों** में **ग्रेड, प्रशंसा, पैसा, ट्रॉफी, मान्यता**, या सजा से बचने जैसे पुरस्कार शामिल हैं।
उदाहरण के लिए, एक छात्र कड़ी मेहनत से अध्ययन कर सकता है, न कि इसलिए कि उसे विषय पसंद है (जो कि **आंतरिक अभिप्रेरणा** होगी), बल्कि इसलिए कि वह उच्च अंक प्राप्त करना चाहता है या डांट से बचना चाहता है। व्यवहार आंतरिक संतुष्टि या रुचि के बजाय **बाहरी सुदृढ़ीकरण** द्वारा संचालित होता है।

सूचना बूस्टर:

1. **बाहरी ट्रिगर**: इसमें पुरस्कार, दंड, ग्रेड, स्टिकर, पदक आदि शामिल हैं।
2. **क्रियाप्रसूत प्रनुकूलन**: स्किनर के सिद्धांत में निहित है जहाँ व्यवहार परिणामों द्वारा आकार लेता है।
3. **अल्पकालिक प्रभावशीलता**: प्रारंभिक रुचि की कमी वाले कार्यों के लिए अच्छी तरह से काम करता है, लेकिन पुरस्कार बंद होने के बाद फीका पड़ सकता है।
4. **अति औचित्य का जोखिम**: बहुत अधिक पुरस्कार कार्य में आंतरिक रुचि को कम कर सकते हैं।
5. **कक्षा उपयोग**: व्यवहार प्रबंधन और सुदृढ़ीकरण में आम शेड्यूल।

अतिरिक्त ज्ञान:

- **(b) व्यक्तिगत संतुष्टि की भावना**: यह **आंतरिक अभिप्रेरणा** को परिभाषित करता है, जहाँ व्यक्ति आंतरिक पूर्ति और उपलब्धि से प्रेरित होता है।
- **(c) कार्य का व्यक्तिगत आनंद**: यह भी **आंतरिक अभिप्रेरणा** का एक रूप है - कुछ ऐसा करना जो केवल इसलिए हो क्योंकि यह आनंददायक या आकर्षक है।
- **(d) आंतरिक कारक**: यह फिर से **आंतरिक अभिप्रेरणा** को संदर्भित करता है, जहाँ व्यवहार व्यक्तिगत मूल्यों, रुचियों या जिज्ञासा द्वारा निर्देशित होता है।

Q.14 अभिकथन (A): शिक्षकों द्वारा प्रदान किया गया स्कैफोल्डिंग बच्चों की अधिगम की प्रक्रिया में बाधा डालती है।
कारण (R): लेव वायगोत्सकी ने प्रस्ताव दिया कि बच्चे स्वतंत्र रूप से पर्यावरण पर कार्य करके और हेरफेर करके सीखते हैं।

सही विकल्प चुनिए:

A. (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
B. (A) और (R) दोनों असत्य हैं।
C. (A) और (R) दोनोंसत्य हैं और (R), (A) का सही स्पष्टीकरण है।
D. (A) और (R) दोनोंसत्य हैं लेकिन (R), (A) का सही स्पष्टीकरण नहीं है।

Answer: B

Sol: सही उत्तर है: **(b) (A) और (R) दोनों असत्य हैं** ।
स्कैफोल्डिंग की अवधारणा जेरोम ब्रूनर द्वारा पेश की गई और वायगोत्सकी के सामाजिक सांस्कृतिक सिद्धांत में निहित है, इसे **बच्चे के अधिगम को बढ़ाने और मजबूत करने के लिए डिज़ाइन किया गया है** , यह इसमें बाधा नहीं है। स्कैफोल्डिंग से तात्पर्य शिक्षकों या अधिक सक्षम साथियों द्वारा प्रदान किए गए अस्थायी समर्थन को है, जिसे धीरे -धीरे हटा दिया जाता है क्योंकि शिक्षार्थी स्वतंत्रता और कार्य की महारत हासिल करता है। एक बाधा होने से दूर, यह बच्चे के भीतर संचालन करके अधिगम की सुविधा प्रदान करता है;
इसके अलावा, लेव वायगोत्सकी ने यह नहीं माना कि बच्चे पूरी तरह से **स्वतंत्र रूप से सीखते हैं**। पियाजे के विपरीत, जिन्होंने व्यक्तिगत अन्वेषण पर जोर दिया, वायगोत्सकी ने अधिगम में **सामाजिक अंत:क्रिया, सांस्कृतिक उपकरण और भाषा** की भूमिका पर जोर दिया। उनके अनुसार, अधिगम **सामाजिक रूप से मध्यस्थता** है और शिक्षार्थी द्वारा आंतरिक रूप से पहले पारस्परिक स्तर पर होता है।

इस प्रकार, अभिकथन और कारण गलत तरीके से वायगोत्सकी के सिद्धांत और **स्कैफोल्डिंग** के उद्देश्य का वर्णनं करते हैं।

Information Booster:

1. **स्कैफोल्डिंग** : मार्गदर्शक अधिगम की एक विधि जो छात्रों का समर्थन करती है क्योंकि वे क्षमता का निर्माण करते हैं।
2. **सामाजिक निर्माणवाद** : एक सामाजिक, सांस्कृतिक और सहयोगी प्रक्रिया के रूप में अधिगम पर जोर देता है।
3. **उत्तरदायित्व की क्रमिक मुक्ति** : **स्कैफोल्डिंग** को हटा दिया जाता है क्योंकि शिक्षार्थी अधिक सक्षम हो जाते हैं।
4. **भाषा और संवाद** : वायगोत्सकी ने संज्ञानात्मक विकास में एक प्रमुख उपकरण के रूप में भाषा को उजागर किया।

Q.15 अभिकथन (A): शिक्षकों को छात्रों से खुद को दूर करना चाहिए और उन पर केवल अधिगम के लिए प्राथमिक जिम्मेदारी रखनी चाहिए।
कारण (R): अधिगम एक लोकतांत्रिक वातावरण के बजाय एक आधिकारिक वातावरण में प्रभावी रूप से होता है।

सही विकल्प चुनिए:

A. (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
B. (A) और (R) दोनों असत्य हैं।
C. (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
D. (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।

Answer: B

Sol: सही उत्तर है: **(b) (A) और (R) दोनों असत्य हैं**।
आधुनिक शैक्षणिक सिद्धांत और शैक्षिक मनोविज्ञान में शोध इस बात पर जोर देते हैं कि **सीखना शिक्षक और शिक्षार्थी के बीच एक साझा जिम्मेदारी है**। शिक्षक केवल ज्ञान देने वाले नहीं होते बल्कि **सुविधादाता, संरक्षक और मार्गदर्शक** होते हैं जो छात्रों के सीखने को सहारा देते हैं। एक शिक्षक की **भावनात्मक उपलब्धता और सक्रिय भागीदारी** एक सहायक वातावरण बनाने के लिए महत्वपूर्ण है जो पूछताछ, प्रेरणा और भागीदारी को प्रोत्साहित करता है।
इसके अलावा, यह विचार कि अधिगम एक **आधिकारिक** (नियंत्रित और कठोर) वातावरण में अधिक प्रभावी होता है, भी **गलत** है। शोध से पता चलता है कि **लोकतांत्रिक और शिक्षार्थी-केंद्रित वातावरण**, जहाँ शिक्षक सुलभ होते हैं और छात्रों की आवाज़ सुनी जाती है, बेहतर शैक्षणिक परिणाम, आलोचनात्मक चिंतन, रचनात्मकता और प्रेरणा का परिणाम देते हैं।

Adda247 GET IT ON Google Play

वायगोत्स्की, पियाजे और ब्रूनर द्वारा प्रचारित **रचनात्मक दृष्टिकोण** भी **सहयोगी अधिगम** का समर्थन करता है, जहाँ शिक्षक और छात्रों के बीच बातचीत समझ को समृद्ध करती है। इसलिए, प्रश्न में दोनों कथन समकालीन शैक्षणिक दृष्टिकोण से गलत हैं।

Q.16 जीन पियाजे के अनुसार, जो बच्चा सरल गणितीय व्युत्क्रमों जैसे **4+5=9** अतः **9-5=4** के पीछे के तर्क को समझने में असमर्थ है, उसका कारण है:

A. एनिमिस्टिक सोच
B. अपरिवर्तनीयता
C. अहंकेंद्रितता
D. अवधारणात्मक केंद्रीकरण

Answer: B

Sol: सही उत्तर **(B) अपरिवर्तनीयता** है ।
जीन पियागेट के **संज्ञानात्मक विकास के प्रीऑपरेशनल चरण** (लगभग 2-7 वर्ष की आयु) में, बच्चों के सामने आने वाली प्रमुख सीमाओं में से एक **अपरिवर्तनीयता** है । इसका मतलब है कि वे घटनाओं या तार्किक संचालन के अनुक्रम को मानसिक रूप से उलटने के लिए संघर्ष करते हैं। उदाहरण के लिए, जबकि एक बच्चा यह समझ सकता है कि 4 + 5 = 9, वे यह नहीं समझ सकते हैं कि इस ऑपरेशन को उलटना - 9 - 5 = 4 - उसी तार्किक नियम का पालन करता है।

अपरिवर्तनीयता **परिचालन सोच की कमी** को दर्शाती है - इस अवस्था में बच्चे अभी तक दोनों दिशाओं में मानसिक संचालन नहीं कर सकते हैं। यही कारण है कि पियाजे ने उनकी सोच को "प्रीऑपरेशनल" कहा। जैसे-जैसे वे **ठोस परिचालन चरण (7-11 वर्ष) में आगे बढ़ते हैं, बच्चों में प्रतिवर्तीता** और **संरक्षण को** समझने की क्षमता विकसित होती है , जो उन्हें संख्याओं, द्रव्यमान और आयतन पर तार्किक तर्क लागू करने की अनुमति देती है।

अतः, विपरीत गणितीय संक्रियाओं को समझने में असमर्थता एक संज्ञानात्मक सीमा है जो विशेष रूप से विकासात्मक अवस्था से जुड़ी है, न कि बुद्धिमत्ता या सीखने की कमी से।

Information Booster

1. **अपरिवर्तनीयता** : किसी प्रक्रिया या ऑपरेशन को मानसिक रूप से उलटने में असमर्थता।
2. **स्टेज उपस्थिति** : पियाजे की प्रीऑपरेशनल अवस्था (2-7 वर्ष) में पाई जाती है।
3. **सीखने पर प्रभाव** : घटाव, भाग और तार्किक तर्क की समझ को प्रभावित करता है।
4. **संबद्ध कौशल** : ठोस परिचालन चरण में तार्किक विचार के विकास के साथ प्रतिवर्तीता उभरती है।
5. **संज्ञानात्मक मील का पत्थर** : गणितीय संबंधों और समस्या समाधान को समझने के लिए प्रतिवर्तीता महत्वपूर्ण है।

Additional Knowledge

- **(a) एनिमिस्टिक सोच** : निर्जीव वस्तुओं को जीवन जैसे गुण प्रदान करना, जैसे यह कहना कि "सूर्य मुस्कुरा रहा है।"
- **(c) अहंकेंद्रितता** : यह किसी चीज़ को दूसरे व्यक्ति के नज़रिए से देखने में असमर्थता है। यह गणितीय समझ से ज़्यादा परिप्रेक्ष्य लेने के बारे में है।
- **(d) अवधारणात्मक केन्द्रीकरण** : इसमें स्थिति के एक पहलू पर ध्यान केन्द्रित करना तथा अन्य पहलुओं को अनदेखा करना शामिल है (जैसे, आयतन कार्यों में ऊँचाई लेकिन चौड़ाई नहीं)। यह संरक्षण कार्यों को प्रभावित करता है।

Q.17 कोहलबर्ग के नैतिक विकास के किस स्तर पर व्यक्ति का नैतिक व्यवहार मुख्य रूप से इस मानसिकता पर निर्भर करता है कि "लोग मेरे बारे में क्या सोचते हैं"?

A. उत्तर-परंपरागत
B. **गैर-परंपरागत**
C. पूर्व-परंपरागत
D. परम्परागत

Answer: D

Sol: सही उत्तर **(d) परम्परागत** है । लॉरेंस कोहलबर्ग के नैतिक विकास के सिद्धांत के **परम्परागत स्तर** पर , एक व्यक्ति का नैतिक तर्क सामाजिक मानदंडों, नियमों और दूसरों द्वारा स्वीकार किए जाने की इच्छा से निर्देशित होता है। यह स्तर आम तौर पर **बचपन के अंत से लेकर किशोरावस्था की शुरुआत तक** उभरता है और इसमें **चरण 3 और 4** शामिल हैं :

- **चरण 3 - अच्छे पारस्परिक संबंध** : केंद्रीय प्रश्न यह है कि "लोग मेरे बारे में क्या सोचते हैं?" इस स्तर पर, व्यक्ति "अच्छे लड़के" या "अच्छी लड़की" बनकर रिश्ते बनाए रखने और अनुमोदन प्राप्त करने का प्रयास करते हैं।
- **चरण 4 - सामाजिक व्यवस्था बनाए रखना** : नैतिक तर्क कानूनों का पालन करने और सामाजिक व्यवस्था बनाए रखने के लिए कर्तव्यों को पूरा करने पर आधारित है।

स्टेज 3 में विशेष रूप से, **साथियों की स्वीकृति और सामाजिक स्वीकृति** महत्वपूर्ण प्रेरक हैं। इस स्तर पर बच्चे और किशोर चाहते हैं कि उन्हें अच्छा, मददगार या वफादार माना जाए और इस प्रकार वे अपने व्यवहार को उसी के अनुसार ढालते हैं। यह स्तर **पूर्व-परंपरागत नैतिकता** के विपरीत है , जो आत्म-केंद्रित है, और **उत्तर-परंपरागत नैतिकता** , जो अमूर्त सिद्धांतों और नैतिकता से प्रेरित है।

Information Booster

1. **पारंपरिक स्तर पर फोकस** : अनुरूपता, निष्ठा और कानून का पालन करने वाले व्यवहार पर जोर दिया जाता है।
2. **चरण 3 कीवर्ड** : "अच्छा लड़का/अच्छी लड़की" अभिविन्यास - सामाजिक स्वीकृति प्राप्त करने पर आधारित व्यवहार।
3. **सामाजिक भूमिकाएँ** : रिश्तों के भीतर कर्तव्यों और नियमों की समझ केंद्रीय हो जाती है।
4. **नैतिक विकास** : स्व-हित से दूसरों के प्रति चिंता की ओर बढ़ना दर्शाता है।
5. **सामान्य आयु** : किशोरों और कुछ वयस्कों में पाया जाता है जो सामाजिक अपेक्षाओं को महत्व देते हैं।

Adda247 GET IT ON Google Play

Additional Knowledge

- **(a) उत्तर-परंपरागत** : नैतिकता न्याय, अधिकार और नैतिकता जैसे आंतरिक सिद्धांतों द्वारा निर्देशित होती है। यहां व्यक्ति **सामाजिक मानदंडों को चुनौती दे** सकता है यदि वे नैतिक मूल्यों के साथ संघर्ष करते हैं।
- **(b) गैर-परंपरागत** : कोहलबर्ग के सिद्धांत में यह एक मान्य स्तर नहीं है। तीन स्तर हैं **पूर्व-परंपरागत, पारंपरिक और उत्तर-परंपरागत** ।
- **(c) पूर्व-परंपरागत** : व्यवहार स्वार्थ से प्रेरित होता है - सज़ा से बचना (चरण 1) या पुरस्कार की चाहत (चरण 2)। यह दूसरों की राय पर विचार **नहीं करता।**

Q.18 लॉरेंस कोहलबर्ग ने तर्क दिया कि:

A. बच्चों में नैतिक विकास निरंतर तरीके से होता है।
B. बच्चों के नैतिक तर्क में सांस्कृतिक अंतर होते हैं।
C. नैतिक विकास क्रमिक रूप से चरणों में होता है।
D. बच्चों के नैतिक तर्क में लिंग अंतर होते हैं।

Answer: C

Sol: सही उत्तर है **(c) नैतिक विकास क्रमिक रूप से चरणों में होता है** ।
लॉरेंस कोहलबर्ग ने जीन पियागेट के नैतिक विकास के सिद्धांत का विस्तार करते हुए प्रस्ताव दिया कि नैतिक तर्क **तीन स्तरों के माध्यम से विकसित होता है, प्रत्येक को दो अलग-अलग चरणों** में विभाजित किया जाता है , जिससे कुल **छह चरण** बनते हैं । उन्होंने तर्क दिया कि यह विकास **प्रगतिशील और पदानुक्रमित** है - बच्चे अपनी संज्ञानात्मक क्षमताओं के परिपक्व होने के साथ एक निश्चित क्रम में इन चरणों से गुजरते हैं।

Information Booster

स्तर इस प्रकार हैं:

1. **पूर्व-परंपरागत स्तर**
   - चरण 1: आज्ञाकारिता और दंड अभिविन्यास
   - चरण 2: व्यक्तिवाद और विनिमय
2. **पारंपरिक स्तर**
   - चरण 3: अच्छे पारस्परिक संबंध
   - चरण 4: सामाजिक व्यवस्था बनाए रखना
3. **उत्तर-परम्परागत स्तर**
   - चरण 5: सामाजिक अनुबंध और व्यक्तिगत अधिकार
   - चरण 6: सार्वभौमिक सिद्धांत

कोहलबर्ग ने इस बात पर जोर दिया कि नैतिक तर्क (वह प्रक्रिया जिसके माध्यम से लोग सही और गलत के बारे में निर्णय लेते हैं) उम्र और अनुभवों के साथ और अधिक परिष्कृत हो जाता है। उनका मानना था कि हालांकि यह **क्रम** सार्वभौमिक है, लेकिन हर कोई नैतिक तर्क के उच्चतम स्तर तक नहीं पहुँच पाता है।

Additional Knowledge

- **(a) निरंतर तरीका** : गलत। कोहलबर्ग ने विकास को **असतत और अनुक्रमिक** के रूप में देखा , न कि एक सहज सातत्य के रूप में।
- **(b) सांस्कृतिक अंतर** : जबकि संस्कृति नैतिक तर्क की **सामग्री को प्रभावित करती है, कोहलबर्ग ने कहा कि संरचना** (यानी, चरण) सार्वभौमिक है।
- **(d) लिंग भेद** : कोहलबर्ग ने लिंग भेद पर जोर नहीं दिया। हालांकि, उनकी छात्रा **कैरोल गिलिगन ने** पुरुष-केंद्रित दृष्टिकोण के लिए उनकी आलोचना की और प्रस्ताव दिया कि महिलाएं अक्सर देखभाल और रिश्तों पर अधिक ध्यान केंद्रित करती हैं।

Q.19 ध्यान घाटे की अति सक्रियता विकार से जूझ रहे छात्रों की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए, शिक्षकों को इनसे बचना चाहिए:

A. ध्यान भटकाना और शोर मचाना।
B. पाठ्यक्रम सामग्री और निर्देशों में लचीलापनपाठ्यक्रम सामग्री और निर्देशों में लचीलापन
C. कार्य को आसानी से संभाले जा सकने वाले छोटे-छोटे भागों में तोड़ना
D. बहु-संवेदी सामग्री का उपयोग करना

Answer: A

Sol: सही उत्तर है **(a) ध्यान भटकाना और शोर मचाना** ।
ध्यान घाटे की अति सक्रियता विकार (ADHD) वाले बच्चों को ध्यान बनाए रखने, आवेगपूर्ण व्यवहार को नियंत्रित करने और कुछ मामलों में अत्यधिक गतिविधि करने में कठिनाई होती है। वे दृश्य और श्रवण दोनों तरह के पर्यावरणीय विकर्षणों के प्रति अत्यधिक संवेदनशील होते हैं। इस प्रकार, शोरगुल या अव्यवस्थित कक्षा बनाने से उनकी ध्यान केंद्रित करने और कार्यों को पूरा करने की क्षमता गंभीर रूप से बाधित होती है।

Information Booster

1. **पर्यावरणीय विकर्षणों को न्यूनतम करें** : शांत क्षेत्रों, दृश्य अवरोधकों और सुसंगत दिनचर्या का उपयोग करें।
2. **बहु-संवेदी उपकरण** : ध्यान बनाए रखने के लिए श्रवण, दृश्य और गतिज चैनलों को शामिल करें।
3. **स्पष्ट निर्देश** : संज्ञानात्मक अधिभार से बचने के लिए जटिल कार्यों को अनुक्रमिक चरणों में विभाजित करें।
4. **सकारात्मक सुदृढीकरण** : लगातार प्रोत्साहन और प्रतिक्रिया कार्य पूरा करने में मदद करती है।
5. **लचीला पाठ्यक्रम** : शिक्षण शैली और सामग्री वितरण को अनुकूलित करना विभिन्न ध्यान अवधियों का समर्थन करता है।

Adda247 GET IT ON Google Play

Additional Knowledge

- **(b) पाठ्यचर्या सामग्री में लचीलापन** : यह लाभकारी है क्योंकि यह विभिन्न शिक्षण शैलियों को समायोजित करता है और ध्यान बनाए रखने में मदद करता है। यह एडीएचडी वाले छात्रों के लिए एक अनुशंसित रणनीति है।
- **(c) कार्यों को छोटे-छोटे भागों में बांटना** : यह अत्यधिक प्रभावी है क्योंकि इससे काम पर अधिक दबाव नहीं पड़ता और ध्यान केंद्रित करने में सुधार होता है। इससे बच्चे को छोटी-छोटी जीत का अनुभव करने में मदद मिलती है, जिससे उसका आत्मविश्वास बढ़ता है।
- **(d) बहु-संवेदी सामग्रियों का उपयोग करना** : संलग्नता को बढ़ाता है और अवधारण में सहायता करता है। ये सामग्रियाँ विभिन्न संवेदी शक्तियों को पूरा करती हैं और शिक्षार्थियों की रुचि बनाए रखती हैं।

Q.20 विकासात्मक शब्दों में, एक समय सीमा जहां एक व्यक्ति कुशल तरीके से कार्य करने के लिए विशेष कौशल विकसित करने के लिए विशेष प्रोत्साहनों के प्रति एक प्रवर्धित संवेदनशीलता को बनाए रखता है, उसे विकास का _____ कहा जाता है।

A. प्रोत्साहनअवधि
B. उत्तेजना अवधि
C. महत्वपूर्ण अवधि
D. एन्कोडिंग अवधि

Answer: C

Sol: सही उत्तर है **(c) महत्वपूर्ण अवधि** ।
एक **महत्वपूर्ण अवधि** विकास के दौरान एक जैविक रूप से निर्धारित चरण है जिसमें एक जीव विशेष रूप से कुछ पर्यावरणीय उत्तेजनाओं के प्रति ग्रहणशील होता है, और जहां कुछ कौशल या व्यवहार हासिल किए जाने चाहिए। यदि व्यक्ति को इस अवधि के दौरान उचित उत्तेजना नहीं मिलती है, तो उस विशेष कौशल के विकास का अवसर खो सकता है या गंभीर रूप से क्षीण हो सकता है।

Information Booster

1. **समय-संवेदनशील विकास** : महत्वपूर्ण अवधि जैविक रूप से संचालित और समय-बद्ध होती है।
2. **उदाहरण** : प्रारंभिक जीवन में भाषा सीखना, दृश्य बोध, और लगाव संबंध।
3. **न्यूरोप्लास्टिसिटी** : महत्वपूर्ण अवधि के दौरान उच्चतम; अनुभवों का स्थायी प्रभाव होता है।
4. **अपरिवर्तनीयता** : खिड़की से चूकने से स्थायी विकासात्मक कमी हो सकती है।
5. **शैक्षिक प्रासंगिकता** : प्रारंभिक बाल्यावस्था हस्तक्षेप इन खिड़कियों के दौरान क्षमता को अधिकतम करने के विचार पर आधारित हैं।

Additional Knowledge

- **(a) प्रोत्साहन अवधि** : विकासात्मक मनोविज्ञान में औपचारिक रूप से मान्यता प्राप्त शब्द नहीं है। प्रोत्साहन प्रेरणा से संबंधित है, विकासात्मक समय से नहीं।
- **(b) उत्तेजना अवधि** : यह भी एक मानक शब्द नहीं है। जबकि उत्तेजनाएँ महत्वपूर्ण होती हैं, इस शब्द में "महत्वपूर्ण अवधि" की विकासात्मक विशिष्टता का अभाव है।
- **(d) एनकोडिंग अवधि** : स्मृति में सूचना संग्रहीत करने की प्रक्रिया को संदर्भित करता है, न कि विकासात्मक संवेदनशीलता के लिए समय सीमा को।

Q.21 स्कूल में खेलने के दौरान, 7 वर्षीय ऋषभ ने खेलने के लिए एक गुड़िया चुनी। उसके कुछ साथियों ने खिलौने के चयन के लिए उसका मज़ाक उड़ाया। एक शिक्षक के रूप में जो चाहता है कि उसके छात्र लिंग भूमिका लचीलेपन के साथ बड़े हों, निम्नलिखित में से कौन सी स्थिति के लिए शिक्षक की सबसे अच्छी प्रतिक्रिया होगी?

A. ऋषभ से बात करें कि गुड़िया लड़कियों के लिए उपयुक्त हैं और लड़कों को गुड़िया के साथ नहीं खेलना चाहिए।
B. ऋषभ से कहो कि उसे किसी और चीज़ से खेलना चाहिए क्योंकि उसके दोस्त उसे गुड़िया के साथ खेलते हुए देखना पसंद नहीं करेंगे।
C. ऋषभ को गुड़िया के साथ खेलने दें और अन्य बच्चों को बताएं कि वे भी अपनी पसंद का कोई भी खिलौना चुन सकते हैं।
D. चुपचाप गुड़िया ले लो और बिना कुछ कहे ऋषभ को एक कार वाला खिलौना दे दो।

Answer: C

Sol: सही उत्तर है **(c) ऋषभ को गुड़िया के साथ खेलने दें और अन्य बच्चों को बताएं कि वे भी अपनी पसंद का कोई भी खिलौना चुन सकते हैं।**
यह प्रतिक्रिया **लिंग भूमिका लचीलेपन को** बढ़ावा देती है , जो यह विचार है कि व्यक्तियों को उनके व्यवहार, विकल्पों या अभिव्यक्तियों में पारंपरिक लिंग रूढ़ियों द्वारा प्रतिबंधित नहीं किया जाना चाहिए। ऋषभ को गुड़िया से खेलने की अनुमति देना लिंग की सामाजिक अपेक्षाओं के बजाय रुचि के आधार पर चुनने के उसके अधिकार की पुष्टि करता है। इसके अलावा, अन्य बच्चों को संबोधित करना उन्हें विविध विकल्पों का सम्मान करने के लिए शिक्षित करता है और एक समावेशी और स्वीकार्य कक्षा के माहौल को बढ़ावा देता है।

Information Booster

1. **लिंग भूमिका लचीलापन** : बच्चों को लिंग बाधाओं के बिना अपनी रुचियों को आगे बढ़ाने और खुद को अभिव्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करता है।
2. **समावेशी कक्षा संस्कृति** : बदमाशी को कम करती है और व्यक्तिगत विकल्पों के प्रति सम्मान को बढ़ावा देती है।
3. **विकासात्मक आवश्यकताएं** : गुड़िया जैसे खिलौने सामाजिक-भावनात्मक विकास और सहानुभूति निर्माण में मदद करते हैं।
4. **शिक्षक की भूमिका** : रूढ़िवादिता को तोड़ने और सम्मानजनक व्यवहार का उदाहरण प्रस्तुत करने में एक सुविधाकर्ता के रूप में कार्य करना।
5. **सीखने में समानता** : लिंग की परवाह किए बिना सभी बच्चों के लिए निष्पक्षता और अवसरों को बढ़ावा देता है।

Additional Knowledge

- **(a) गुड़िया केवल लड़कियों के लिए हैं** : पुराने लिंग मानदंडों को मजबूत करता है। यह बच्चे के आत्मसम्मान को नुकसान पहुंचा सकता है और विकास के अवसरों को सीमित कर सकता है।
- **(b) साथियों को खुश करने के लिए गुड़िया से बचें** : यह व्यक्तित्व और आत्म-अभिव्यक्ति पर अनुरूपता और साथियों के दबाव को बढ़ावा देता है। यह दृष्टिकोण बच्चों को स्वीकृति पाने के लिए अपनी रुचियों को दबाना सिखाता है।
- **(d) चुपचाप खिलौना बदल देना** : टालने वाला व्यवहार जो न तो रूढ़िवादिता को संबोधित करता है और न ही बच्चे का समर्थन करता है। यह अस्वीकृति का एक सूक्ष्म संदेश भेजता है।

Q.22 पियाजे ने संज्ञानात्मक विकास को इस प्रकार वर्णित किया है:

A. एक सतत सातत्य
B. चार अतिव्यापी संस्कृति विशिष्ट चरण
C. चार गुणात्मक रूप से भिन्न चरण
D. तीन प्रगतिशील स्तर

Answer: C

Sol: सही उत्तर है **(c) चार गुणात्मक रूप से भिन्न चरण**
विकासात्मक मनोविज्ञान के अग्रणी जीन पियागेट ने प्रस्तावित किया कि बच्चे संज्ञानात्मक विकास के **चार अलग-अलग, अनुक्रमिक चरणों से गुजरते हैं। ये चरण गुणात्मक रूप से भिन्न** हैं , जिसका अर्थ है कि बच्चों के सोचने और दुनिया को समझने का तरीका एक चरण से दूसरे चरण में मौलिक रूप से बदलता है - न केवल मात्रा या गति में, बल्कि प्रकार में भी।

चरण इस प्रकार हैं:

1. **संवेदी-मोटर चरण (0-2 वर्ष)** - संवेदी अनुभवों और मोटर क्रियाओं के माध्यम से दुनिया को समझना।
2. **पूर्वसंचालन चरण (2-7 वर्ष)** – भाषा और प्रतीकात्मक सोच का विकास; अहं-केंद्रित और सहज तर्क।
3. **ठोस परिचालन चरण (7-11 वर्ष)** - ठोस वस्तुओं के बारे में तार्किक तर्क; संरक्षण और प्रतिवर्तीता की समझ।
4. **औपचारिक परिचालन चरण (12 वर्ष और अधिक)** - अमूर्त और काल्पनिक तर्क; समस्या-समाधान व्यवस्थित और तार्किक हो जाता है।

Information Booster

1. **असंतत मॉडल** : पियाजे का सिद्धांत एक चरण-जैसी प्रगति का समर्थन करता है, न कि एक सहज, निरंतर परिवर्तन का।
2. **गुणात्मक अंतर** : प्रत्येक चरण मौलिक रूप से सोचने के नए तरीकों का परिचय देता है।
3. **सार्वभौमिकता** : विभिन्न संस्कृतियों में चरण सार्वभौमिक हैं, यद्यपि संक्रमण की आयु भिन्न हो सकती है।
4. **अपरिवर्तनीय क्रम** : बच्चे बिना रुके एक ही क्रम में चरणों से गुजरते हैं।
5. **रचनावाद** : बच्चे अपने आस-पास के वातावरण के साथ अंतःक्रिया करके सक्रिय रूप से ज्ञान का निर्माण करते हैं।

Q.23 बच्चे अक्सर अपने आस-पास की घटनाओं के बारे में अपने-अपने तरीके से व्याख्या करते हैं। जब उनसे पूछा गया कि बारिश क्यों होती है, तो सिया कहती हैं - "भगवान अपने कंधों पर पानी की बाल्टी ढोते-ढोते थक गए थे"। इस तरह के स्पष्टीकरण:

A. चित्रित करें कि बच्चों का दृष्टिकोण अहंकारी होता है और वे दूसरों के दृष्टिकोण पर विचार नहीं कर सकते हैं।
B. उदाहरण देकर समझाइए कि बच्चे तर्क करने में सक्षम नहीं हैं।
C. सिद्ध कीजिए कि बच्चों की सोच मात्रात्मक रूप से वयस्कों की तुलना में बहुत कम होती है।
D. इंगित करें कि बच्चों में सांस्कृतिक संदर्भ में निहित भोली समझ होती है जिसके आधार पर वे घटनाओं को समझने का प्रयास करते हैं।

Answer: D

Sol: सही उत्तर है **(d) इंगित करें कि बच्चों में सांस्कृतिक संदर्भ में निहित भोली समझ होती है जिसके आधार पर वे घटनाओं को समझने का प्रयास करते हैं।**
सिया का स्पष्टीकरण **भोली या सहज सोच** का एक उदाहरण है जो बचपन में आम है, खासकर **प्रीऑपरेशनल चरण** (2-7 वर्ष) में जैसा कि जीन पियागेट द्वारा परिभाषित किया गया है। इस अवस्था में, बच्चे अपने व्यक्तिगत अनुभवों, सांस्कृतिक शिक्षाओं और सुनी गई कहानियों के आधार पर कल्पनाशील, प्रतीकात्मक और जादुई तर्क का उपयोग करते हैं।

Information Booster

1. **सरल सिद्धांत** : बच्चे अवलोकनों और सांस्कृतिक सूचनाओं से प्रभावित होकर दुनिया को समझने के लिए "सिद्धांत" बनाते हैं।
2. **सांस्कृतिक प्रभाव** : कहानियाँ, धार्मिक विश्वास और दैनिक जीवन बच्चों की व्याख्या को आकार देते हैं।
3. **पियाजे की पूर्वसंचालन अवस्था** : इसमें औपचारिक तर्क नहीं, बल्कि प्रतीकात्मक सोच और कल्पनाशील खेल की विशेषता होती है।
4. **मानवरूपता** : इस अवस्था में गैर-मानवीय तत्वों को मानवीय गुण प्रदान करना आम बात है।
5. **रचनावाद** : बच्चों को ज्ञान का निर्माण करने वाले सक्रिय शिक्षार्थी के रूप में देखा जाता है, न कि निष्क्रिय प्राप्तकर्ता के रूप में।

Additional Knowledge

- **(a) अहंकेंद्रवाद** : जबकि अहंकेंद्रवाद (पियागेट के अनुसार) मौजूद है, यह दूसरों के दृष्टिकोण को लेने में कठिनाई को संदर्भित करता है - घटनाओं के लिए स्पष्टीकरण का आविष्कार नहीं करना। यह विकल्प व्यवहार को गलत तरीके से प्रस्तुत करता है।
- **(b) तर्क करने में असमर्थ** : बच्चे तर्क **तो करते हैं** , लेकिन सहज और कल्पनाशील तर्क के आधार पर, वयस्कों जैसे औपचारिक तर्क के आधार पर नहीं।
- **(c) मात्रात्मक रूप से कम सोचना** : संज्ञानात्मक विकास **गुणात्मक रूप से** अलग होता है, न कि केवल वयस्कों की तुलना में "कम"। पियाजे ने इस बात पर जोर दिया कि बच्चे मौलिक रूप से अलग तरीके से सोचते हैं - न कि केवल कम तरीकों से।

Q.24 अभिकथन (A): 5-6 वर्ष से कम आयु के बच्चों पर 'ठीक से' और 'पंक्तियों के भीतर' लिखने का दबाव नहीं डाला जाना चाहिए।
कारण (R): बच्चे 5-6 वर्ष की आयु से ही सूक्ष्म मोटर कौशल पर नियंत्रण प्राप्त कर लेते हैं।
सही विकल्प चुनें:

A. (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।

B. (A) और (R) दोनों असत्य हैं
C. (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) का सही स्पष्टीकरण है।
D. (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) का सही स्पष्टीकरण नहीं है।

Answer: C

Sol: सही उत्तर है **(c) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) का सही स्पष्टीकरण है** ।
सूक्ष्म मोटर विकास छोटी मांसपेशियों के समन्वय को संदर्भित करता है, विशेष रूप से हाथों और उंगलियों में। बचपन में, विशेष रूप से 5 वर्ष की आयु से पहले, बच्चे अभी भी इन कौशलों का विकास कर रहे होते हैं। इस विकासात्मक चरण के पूरी तरह से स्थापित होने से पहले छोटे बच्चों से "ठीक से" या "लाइनों के भीतर" लिखने की मांग करना न केवल अवास्तविक है, बल्कि अनावश्यक निराशा और प्रेरणा को नुकसान पहुंचा सकता है।

5-6 वर्ष की आयु के बीच , बच्चे आमतौर पर हाथ-आंखों के समन्वय, पेंसिल की पकड़ और अपने लेखन स्ट्रोक पर नियंत्रण में सुधार दिखाना शुरू कर देते हैं। यह विकासात्मक मील का पत्थर संरचित लेखन कार्यों जैसे पंक्तियों के भीतर रहना या स्पष्ट अक्षर बनाना आदि का समर्थन करता है।

इसलिए, **कारण (R)** कि इस उम्र के आसपास बच्चों में ठीक मोटर नियंत्रण विकसित होता है, सीधे तौर पर इस **कथन (A)** का समर्थन करता है कि लेखन कार्य को उचित समय से पहले मजबूर नहीं किया जाना चाहिए। इस विकासात्मक तत्परता से पहले बच्चों पर दबाव डालने से नकारात्मक आत्म-सम्मान, सीखने के प्रति अरुचि और तनाव हो सकता है।

Information Booster

1. **सूक्ष्म मोटर विकास माइलस्टोन** : धीरे-धीरे उभरता है; 5-6 वर्षों में महत्वपूर्ण सुधार देखा जाता है।
2. **लेखन-पूर्व कौशल** : मोतियों को पिरोना, चित्र बनाना और मिट्टी से खेलना जैसी गतिविधियां आधारभूत नियंत्रण का निर्माण करती हैं।
3. **पेंसिल पकड़ का विकास** : मुट्ठी की पकड़ से तिपाई की पकड़ तक आमतौर पर 5-6 वर्ष की आयु के आसपास परिपक्व होता है।
4. **विकासात्मक रूप से उपयुक्त अभ्यास (DAP)** : बच्चों के विकास चरणों के अनुरूप शिक्षण विधियों को प्रोत्साहित करता है।
5. **प्रारंभिक शैक्षणिक दबाव से बचना** : सकारात्मक शिक्षण दृष्टिकोण और समग्र विकास को बढ़ावा देता है।

Q.25 बच्चे बेहतर सीखते हैं यदि वे अनुभव करते हैं:

A. गतिविधि के दौरान सतर्कता का निम्न स्तर
B. सीखने के लिए मध्यम स्तर का उत्साह
C. प्रदर्शन करने के लिए उच्च स्तर की चिंता
D. सीखा हुआ असहायपन

Answer: B

Sol: सही उत्तर है **(b) सीखने के लिए मध्यम स्तर का उत्साह**
बच्चों की शिक्षा उनकी भावनात्मक और संज्ञानात्मक स्थितियों से काफी प्रभावित होती है। उत्साह या उत्तेजना का एक मध्यम स्तर प्रेरणा, ध्यान और जुड़ाव को बढ़ाता है - प्रभावी सीखने के लिए प्रमुख तत्व। उत्तेजना की यह इष्टतम स्थिति ध्यान अवधि, बेहतर स्मृति प्रतिधारण और समस्याओं का पता लगाने और हल करने की इच्छा को बढ़ाती है।

Information Booster

1. **यर्केस-डोडसन नियम** : यह बताता है कि चरम प्रदर्शन के लिए उत्तेजना का एक इष्टतम स्तर होता है।
2. **खेल के माध्यम से सहभागिता** : खेल-आधारित शिक्षण और पूछताछ के माध्यम से अक्सर मध्यम उत्साह उत्पन्न होता है।
3. **प्रेरणा** : आंतरिक प्रेरणा मध्यम उत्तेजक वातावरण में पनपती है।
4. **शिक्षक की भूमिका** : प्रभावी शिक्षक उत्साह बनाए रखने के लिए कहानी सुनाने, प्रश्न पूछने और इंटरैक्टिव तरीकों का उपयोग करते हैं।
5. **तंत्रिका विज्ञान अंतर्दृष्टि** : मस्तिष्क-आधारित शिक्षण से पता चलता है कि मध्यम उत्तेजना के दौरान डोपामाइन का स्राव स्मृति एन्कोडिंग को बढ़ाता है।

Additional Knowledge

- **(a) गतिविधि के दौरान सतर्कता का निम्न स्तर** : इससे असावधानी और खराब जुड़ाव होता है। मानसिक रूप से सतर्क न होने पर बच्चे जानकारी भूल जाते हैं या गलतियाँ कर देते हैं।
- **(c) प्रदर्शन करने की अत्यधिक चिंता** : तनाव प्रतिक्रियाओं को ट्रिगर करता है जो स्मृति, ध्यान और संज्ञानात्मक लचीलेपन को खराब करता है। यह विफलता का डर पैदा करता है और भागीदारी को कम कर सकता है।
- **(d) सीखी हुई असहायता** : ऐसी स्थिति जिसमें बच्चे मानते हैं कि उनके सीखने के परिणामों पर उनका कोई नियंत्रण नहीं है। यह अलगाव, कम प्रेरणा और पहल की कमी की ओर ले जाता है - जो शैक्षणिक सफलता के लिए एक गंभीर बाधा है।

Q.26 समावेशन को बढ़ावा देने के लिए निम्न बातों का ध्यान रखना होगा:

(i) लचीला पाठ्यक्रम
(ii) सहकारी शिक्षा
(iii) पृथक्करण और लेबलिंग
(iv) भवन की सुगमता

A. (ii) (iii) (iv)
B. (i) (ii) (iii) (iv)
C. (i) (ii) (iii)
D. (i) (ii) (iv)

Adda247 GET IT ON Google Play

Answer: D

Sol: सही उत्तर **(d) (i), (ii), (iv)** है ।
शिक्षा में समावेशन से तात्पर्य उन प्रथाओं से है जो सभी बच्चों को सुनिश्चित करती हैं - क्षमता, पृष्ठभूमि या सीखने की जरूरतों की परवाह किए बिना - सीखने के अवसरों तक समान पहुंच होती है और स्कूल समुदाय के हिस्से के रूप में उनका स्वागत किया जाता है।

- एक **लचीला पाठ्यक्रम** (i) शिक्षकों को विविध शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए सामग्री और मूल्यांकन विधियों को अनुकूलित करने की अनुमति देता है।
- **सहकारी शिक्षा** (ii) सहकर्मी-से-सहकर्मी अंतःक्रिया को प्रोत्साहित करती है तथा सामाजिक समावेशन और सहानुभूति को बढ़ावा देती है।
- **भवनों की सुगमता** (iv) यह सुनिश्चित करती है कि शारीरिक रूप से विकलांग छात्र स्कूल के सभी भागों तक भौतिक रूप से पहुंच सकें और पूरी तरह से भाग ले सकें।

हालाँकि, **अलगाव और लेबलिंग** (iii) समावेशी सिद्धांतों के खिलाफ़ हैं। ये प्रथाएँ विकलांग या सीखने की कठिनाइयों वाले छात्रों को अलग-थलग कर देती हैं और नकारात्मक रूढ़ियों को मजबूत करती हैं। सच्ची समावेशी शिक्षा इन बाधाओं को दूर करती है।

इसलिए, समावेशन का समर्थन करने वाली सही तिकड़ी में विकल्प (i), (ii) और (iv) शामिल हैं।

Q.27 हॉवर्ड गार्डनर के अनुसार, एक वैज्ञानिक उच्च _____ बुद्धि प्रदर्शित करेगा, जबकि एक मूर्तिकार के पास उच्च _____ बुद्धि होगी।

A. प्राकृतिक; स्थानिक
B. संक्रामक; स्थानिक
C. तार्किक-गणितीय; शारीरिक गतिज
D. स्थानिक; शारीरिक गतिज

Answer: C

Sol: सही उत्तर है **(c) तार्किक-गणितीय; शारीरिक गतिज** ।
हॉवर्ड गार्डनर ने अपने **मल्टीपल इंटेलिजेंस के सिद्धांत** में प्रस्तावित किया कि बुद्धिमत्ता एक सामान्य क्षमता नहीं है, बल्कि **कई अलग-अलग बुद्धिमत्ताओं** का संयोजन है। प्रत्येक व्यक्ति में इन बुद्धिमत्ताओं की अलग-अलग डिग्री होती है।

वैज्ञानिक तर्क, विश्लेषण और समस्याओं को सुलझाने के लिए **तार्किक-गणितीय बुद्धि का उपयोग करते हैं। मूर्तिकार कला बनाने के लिए हाथों और शारीरिक गति का उपयोग करने के लिए शारीरिक-गतिशील बुद्धि** पर निर्भर करते हैं । गार्डनर का सिद्धांत विभिन्न व्यवसायों के लिए विभिन्न प्रकार की बुद्धि का समर्थन करता है।

Information Booster

1. **तार्किक-गणितीय बुद्धि** अक्सर **वैज्ञानिकों, इंजीनियरों और गणितज्ञों** में पाई जाती है ।
2. इसमें **संख्यात्मक क्षमता** , **तार्किक विचार** और **वैज्ञानिक विचार** शामिल हैं .
3. **शारीरिक गतिज बुद्धि नर्तकों, एथलीटों, शल्य चिकित्सकों और मूर्तिकारों** में आम है ।
4. गार्डनर का सिद्धांत बुद्धि के पारंपरिक **IQ-आधारित दृष्टिकोण को** चुनौती देता है ।
5. यह सिद्धांत विविध शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कक्षाओं में **विभेदित अनुदेशन का समर्थन करता है।**

Q.28 गतिज शिक्षार्थी _____ के माध्यम से सीखना पसंद करते हैं।

A. देखना
B. छूना
C. करना और चलना
D. सुनना

Answer: C

Sol: सही उत्तर **(c) करना और चलना** है ।
गतिज शिक्षार्थी वे व्यक्ति होते हैं जो **शारीरिक गति और हाथों से किए जाने वाले अनुभवों के माध्यम से सबसे अच्छा सीखते हैं। हॉवर्ड गार्डनर के मल्टीपल इंटेलिजेंस के सिद्धांत** के अनुसार , ये शिक्षार्थी **शारीरिक-गतिज बुद्धि** से जुड़े होते हैं । वे अवधारणाओं को बेहतर ढंग से समझते हैं जब वे **अपने शरीर को** सीखने की प्रक्रिया में शामिल कर सकते हैं - चाहे प्रयोगों, भूमिका निभाने, सिमुलेशन या ऐसी गतिविधियों के माध्यम से जिसमें वस्तुओं में हेरफेर करना शामिल हो।

Information Booster

1. गतिज शिक्षार्थियों को **परियोजना-आधारित शिक्षा** और **अनुभवात्मक गतिविधियों** से लाभ मिलता है ।
2. वे अक्सर मजबूत **मांसपेशी स्मृति का** प्रदर्शन करते हैं और **कार्यों की पुनरावृत्ति** के माध्यम से अच्छी तरह से सीखते हैं ।
3. **गतिविधि संबंधी ब्रेक से** उनका ध्यान और धारणा बेहतर हो सकती है।
4. **कार्य-उन्मुख गतिविधियाँ** जैसे कि भूमिका निभाना या मॉडल बनाना, उनकी संज्ञानात्मक संलग्नता को समर्थन प्रदान करती हैं।
5. **गणित में मैनिपुलेटिव्स** या **विज्ञान में प्रयोगशाला उपकरणों** का उपयोग सीखने को मजबूत बनाने में मदद करता है।

Additional Knowledge

- **(a) देखना** : यह **दृश्य शिक्षार्थियों के लिए** उपयुक्त है , जो ग्राफ, चार्ट और सूचना के स्थानिक संगठन को पसंद करते हैं।
- **(b) छूना: जबकि गतिज शिक्षार्थी स्पर्श का उपयोग करते हैं, यह स्पर्श शिक्षार्थियों** के साथ अधिक ओवरलैप होता है जो विशेष रूप से स्पर्श की भावना के माध्यम से सीखते हैं (उदाहरण के लिए, बनावट, रूप), लेकिन जरूरी नहीं कि गति के माध्यम से।

Test Prime
By Adda247

Previous Year Papers PDF

PRACTICE MORE, SCORE HIGHER!

PDF

Free 25,000+ PDF's

High-Quality | Exam-Wise | Updated Regularly

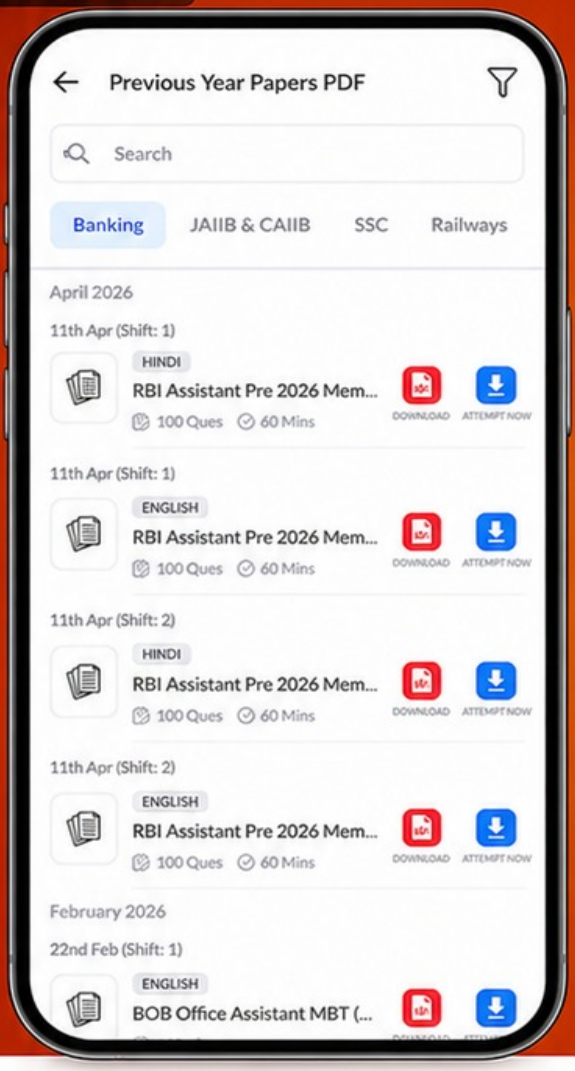

ATTEMPT AS MOCK

Turn PDFs into real exam experience.
Analyze. Improve. Succeed.

- Topic-wise & Exam-wise PDFs
- Download & Study Offline
- Attempt as Mock & Track Score
- Smart Analysis & Performance

AVAILABLE IN

Banking | SSC | Railway | Teaching | UGC | Agriculture | Nursing

Bihar | UP | Punjab | WB | Odisha | TN | AP & Telangana | Haryana

DOWNLOAD THE APP

Adda247 GET IT ON Google Play

- **(d) सुनना** : यह **श्रवण-आधारित शिक्षार्थियों** के लिए उपयुक्त है , जो व्याख्यान, चर्चा और ऑडियो सामग्री के माध्यम से सर्वोत्तम ढंग से सीखते हैं।

Q.29 अभिकथन (A): शिक्षक को अपनी कक्षा के लड़कों को खेलकूद में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए जबकि लड़कियों को कला सजावट का काम सौंपना चाहिए।
कारण (R): बच्चे मुख्य रूप से अंतर्निहित जैविक अंतरों के कारण लिंग भूमिकाएँ प्राप्त करते हैं।
सही विकल्प चुनें:

A. (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
B. (A) और (R) दोनों असत्य हैं।
C. (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) का सही स्पष्टीकरण है।
D. (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) का सही स्पष्टीकरण नहीं है।

Answer: B

Sol: सही उत्तर है **(b) (A) और (R) दोनों असत्य हैं** ।
अभिकथन (A) असत्य है क्योंकि पारंपरिक लिंग भूमिकाओं के आधार पर गतिविधियाँ सौंपना - जैसे लड़कों के लिए खेल और लड़कियों के लिए कला को बढ़ावा देना - **लिंग संबंधी रूढ़ियों को** बनाए रखता है । यह दृष्टिकोण बच्चों की क्षमता को सीमित करता है और पक्षपाती सामाजिक मानदंडों को मजबूत करता है। एक **लिंग-संवेदनशील शिक्षक को सभी बच्चों को समान अवसर** प्रदान करना चाहिए , लिंग की परवाह किए बिना, रुचि और क्षमता के आधार पर भागीदारी को प्रोत्साहित करना चाहिए, न कि सामाजिक अपेक्षाओं पर।

कारण (R) भी असत्य है। लिंग भूमिकाओं का अधिग्रहण काफी हद तक एक **सामाजिक और सांस्कृतिक निर्माण** है , न कि केवल जैविक अंतर का परिणाम। **सामाजिक शिक्षण सिद्धांत (अल्बर्ट बंडुरा द्वारा प्रस्तावित) बताता है कि बच्चे अपने वातावरण में अवलोकन** , **अनुकरण** , **सुदृढ़ीकरण** और **मॉडलिंग** के माध्यम से लिंग भूमिकाएँ सीखते हैं - विशेष रूप से माता-पिता, शिक्षकों, मीडिया और साथियों से।

Information Booster

1. **NCF 2005** स्कूल प्रथाओं में लैंगिक पूर्वाग्रह और रूढ़िवादिता को हटाने पर जोर देता है।
2. **यूनेस्को** सभी पाठ्यक्रम और सह-पाठ्यक्रम क्षेत्रों में लैंगिक-समान भागीदारी को बढ़ावा देता है।
3. शिक्षकों को **परिवर्तन के एजेंट** के रूप में कार्य करना चाहिए तथा रूढ़िवादिता को मजबूत करने के बजाय उसे चुनौती देनी चाहिए।
4. **सह-शैक्षणिक गतिविधियाँ** लिंगों के बीच आपसी सम्मान विकसित करने में मदद करती हैं।
5. लिंग संबंधी भूमिकाएं सीखे गए व्यवहार हैं जो **सामाजिक मानदंडों** द्वारा निर्धारित होते हैं , न कि प्राकृतिक नियमों द्वारा।

Q.30 सार्थक शिक्षा मुख्यतः इस बारे में नहीं है:

A. जानकारी को याद रखना
B. अवधारणा को समझना
C. ज्ञान का निर्माण करना
D. कौशल विकसित करना

Answer: A

Sol: सही उत्तर है **(a) जानकारी को याद रखना** ।
सार्थक शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें शिक्षार्थी **जानकारी के साथ सक्रिय रूप से जुड़ते हैं** , इसे **पूर्व ज्ञान** से जोड़ते हैं , और **व्यक्तिगत अर्थ का निर्माण करते हैं** । इस प्रकार के सीखने से **गहरी समझ** , दीर्घकालिक अवधारण और वास्तविक जीवन के संदर्भों में **ज्ञान का हस्तांतरण** होता है। यह रटने से परे है, जो एक सतही स्तर की संज्ञानात्मक गतिविधि है जो आम तौर पर समझ या अनुप्रयोग के बिना अस्थायी याद की ओर ले जाती है।

Information Booster

1. **डेविड औसुबेल ने** इस बात पर जोर दिया कि "सीखने को प्रभावित करने वाला सबसे महत्वपूर्ण कारक यह है कि शिक्षार्थी पहले से क्या जानता है।"
2. सार्थक शिक्षा **संबंधपरक** होती है , पृथक नहीं।
3. इसमें **सक्रिय प्रसंस्करण** , **आलोचनात्मक सोच** और **वैचारिक जुड़ाव** शामिल है ।
4. **यह समस्या समाधान** , **रचनात्मकता** और **नवाचार** के लिए आवश्यक है ।
5. सार्थक शिक्षण के मूल्यांकन में अक्सर **अनुप्रयोग-आधारित प्रश्न** , **परियोजनाएं** और **वास्तविक जीवन के कार्य** शामिल होते हैं ।

Additional Knowledge

- **(b) अवधारणा को समझना** : सार्थक सीखने का एक मुख्य हिस्सा। शिक्षार्थी अंतर्निहित सिद्धांतों को समझते हैं और उन्हें नए संदर्भों में समझा सकते हैं या लागू कर सकते हैं।
- **(v) ज्ञान का निर्माण : रचनावादी शिक्षण सिद्धांतों का** मूल । शिक्षार्थी अपने मौजूदा ज्ञान और अनुभवों के आधार पर नए विचारों का निर्माण करते हैं।
- **(d) कौशल विकसित करना** : विशेष रूप से **21वीं सदी के कौशल** जैसे सहयोग, संचार और आलोचनात्मक सोच, ये सार्थक, व्यावहारिक शिक्षा के परिणाम हैं।